



## ॥ हनुमान् चालीसा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज  
निज मनु मुकुर सुधार।  
बरनऊँ रघुवर विमल यश  
जो दायकु फल चार॥

बुद्धिहीन तनु जानिके  
सुमिरौ पवनकुमार।  
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं  
हरहु कलेस विकार॥

### ॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर।  
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर॥ १ ॥

राम दूत अतुलित बल धामा।  
अञ्जनिपुत्र पवनसुत नामा॥ २ ॥

महावीर विक्रम बजरङ्गी।  
कुमति निवार सुमति के सङ्गी॥ ३ ॥

कञ्चन बरन विराज सुवेसा।  
कानन कुण्डल कुञ्चित केशा॥ ४ ॥

हाथ वज्र औ ध्वजा विराजै।  
काँधे मूँज जनेऊ साजै॥ ५ ॥

सङ्कर सुवन केसरीनन्दन।  
तेज प्रताप महा जग वन्दन॥ ६ ॥

विद्यावान गुणी अति चातुर।  
राम काज करिबे को आतुर॥ ७ ॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।  
राम लखन सीता मन बसिया॥ ८ ॥

राम लक्ष्मण जानकी।  
जय बोलो हनुमान् की॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।  
विकट रूप धरि लङ्का जरावा॥ ९ ॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे।  
रामचन्द्र के काज सँवारे॥ १० ॥

लाय सजीवन लखन जियाये।  
श्रीरघुवीर हरषि उर लाये॥ ११ ॥

रघुपति कीन्ही बहुत बडाई।  
तुम मम प्रिय भरत सम भाई॥ १२ ॥

सहस वदन तुम्हरो यश गावैं।  
अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं॥ १३ ॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा।  
नारद शारद सहित अहीशा॥ १४ ॥

यम कुबेर दिक्पाल जहाँ ते।  
कवि कोविद कहि सके कहाँ ते॥ १५ ॥

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।  
राम मिलाय राज पद दीन्हा॥ १६ ॥

राम लक्ष्मण जानकी।  
जय बोलो हनुमान् की॥

तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना।  
लङ्केश्वर भये सब जग जाना॥ १७ ॥

युग सहस्र योजन पर भानू।  
लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥ १८ ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।  
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥ १९ ॥

दुर्गम काज जगत के जेते।  
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥ २० ॥

राम दुआरे तुम रखवारे।  
होत न आज्ञा बिन पैसारे॥ २१ ॥

सब सुख लहै तुम्हारी सरना।  
तुम रक्षक काहू को डर ना॥ २२ ॥

आपन तेज सम्हारो आपै।  
तीनों लोक हाँक तें काँपै॥ २३ ॥

भूत पिशाच निकट नहिं आवैं।  
महावीर जब नाम सुनावैं॥ २४ ॥

राम लक्ष्मण जानकी।  
जय बोलो हनुमान् की॥

नाशै रोग हरै सब पीरा।  
जपत निरन्तर हनुमत वीरा॥ २५ ॥

सङ्कट से हनुमान लुडावै।  
मन क्रम वचन ध्यान जो लावै॥ २६ ॥

सब पर राम तपस्वी राजा।  
तिन के काज सकल तुम साजा ॥ २७ ॥

और मनोरथ जो कोई लावै।  
दासु अमित जीवन फल पावै ॥ २८ ॥

चारों युग प्रताप तुम्हारा।  
है प्रसिद्ध जगत उजियारा ॥ २९ ॥

साधु सन्त के तुम रखवारे।  
असुर निकन्दन राम दुलारे ॥ ३० ॥

अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता।  
अस बर दीन जानकी माता ॥ ३१ ॥

राम रसायन तुम्हरे पासा।  
सदा रहो रघुपति के दासा ॥ ३२ ॥

राम लक्ष्मण जानकी।  
जय बोलो हनुमान् की ॥

तुम्हरे भजन राम को पावै।  
जन्म जन्म के दुख बिसरावै ॥ ३३ ॥

अन्त काल रघुपति पुर जाई।  
जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥ ३४ ॥

और देवता चित्त न धरई।  
हनुमत सेई सर्व सुख करई ॥ ३५ ॥

सङ्कट कटै मिटै सब पीरा।  
जो सुमिरै हनुमत बलवीरा ॥ ३६ ॥

जै जै जै हनुमान गोसाई।  
कृपा करहु गुरु देव की नाई ॥ ३७ ॥

यह शत पार पाठ कर कोई।  
छूटहि बंदि महा सुख होई ॥ ३८ ॥

यो यह पढ़ै हनुमान् चलीसा।  
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥ ३९ ॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा।  
कीजै नाथ हृदय मैं डेरा ॥ ४० ॥

राम लक्ष्मण जानकी।  
जय बोलो हनुमान् की ॥

This stotra can be accessed in multiple scripts at:  
[http://stotrasamhita.net/wiki/Hanuman\\_Chalisa](http://stotrasamhita.net/wiki/Hanuman_Chalisa).

📄 generated on **February 1, 2025**

Downloaded from 🌐 <http://stotrasamhita.github.io> | 📺 StotraSamhita | Credits